मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने आकाश में चमकते तारों को स्नेहहीन क्यों कहा है?

Answer:

कवयित्री महादेवी वर्मा ने आकाश में जगमगाते असंख्य तारों को 'स्नेहहीन दीपक' कहा है क्योंकि वे बिना स्नेह (तेल) के ही जलते रहते हैं। वे किसी को प्रकाश नहीं देते। कवयित्री ने इन स्नेहहीन दीपकों की तुलना उन असंख्य मनुष्यों से की है, जिनके हृदय में दया, करुणा, ममता का भाव नहीं है। जिनमें परोपकार और उत्साह का अभाव है; जो किसी का मार्ग प्रशस्त नहीं करते।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में कवयित्री के दीपक से ज्वाला-कण कौन माँग रहे हैं और क्यों?

Answer:

संसार के वे जीव जिनके हृदय में अभी ईश्वर प्रेम की लौ नहीं जगी है, जो भक्ति के मार्ग पर अभी नवीन हैं, परंतु जिनके हृदय में कोमलता है, शीतलता है वे कवयित्री के आस्था रूपी दीपक से आस्था रूपी चिंगारी माँग रहे हैं, जिससे उनके हृदय में भी आस्था रूपी दीपक प्रज्वलित हो जाए। मनुष्य के हृदय में आस्था न होने के कारण उनका हृदय ईर्ष्या-द्वेष में जलता रहता है, परंतु आस्था की लौ जगने पर, ज्ञान का प्रकाश होने पर मनुष्य इन विकारों (बुराइयों) से मुक्ति पा लेता है।

Question 3.

. महादेवी वर्मा अपने दीपक को किस प्रकार जलने के लिए कह रही है और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कवयित्री महादेवी वर्मा अपने आस्था रूपी दीपक से मधुर-मधुर, पुलक-पुलक और विहँस-विहँस कर जलने का आग्रह करती हैं। 'मधुर-मधुर' में मौन मुस्कान है, 'पुलक-पुलक' में हँसी की उमंग है। कवयित्री चाहती हैं कि उनकी भक्ति भावना में प्रसन्नता बनी रहे। चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो आस्था रूपी दीपक हँसते हुए, प्रसन्नतापूर्वक जलता रहे और परमात्मा का मार्ग प्रशस्त करे। वे आस्था रूपी इस दीपक से अपना अस्तित्व मिटाकर भी जलने का आह्वान कर रही हैं क्योंकि कवयित्री के लिए प्रभु ही सर्वस्व है। वह अपने हृदय में प्रभु के प्रति आस्था और भक्ति की लौ लगाए रखना चाहती हैं।

दीर्घ उत्तरी प्रश्न

Question 4.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!' कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा कहती हैं कि प्रियतम-परमात्मा से मिलने के लिए कठोर साधना करनी पड़ती है। आत्मा को दीपक बनकर जलाना पड़ता है। मनुष्य को प्रसन्नचित होकर परमात्मा प्राप्ति के इस मार्ग को आलोकित करना चाहिए। ईश्वर प्राप्ति के लिए हमें अपने शरीर की कोमलता को मोम की भाँति साधना में पिघलाना होगा। ऐसा करके ही विश्व के अन्य लोगों के हृदय में ईश्वर प्राप्ति की लौ लगाई जा सकती है। आज मनुष्य सांसारिक वैभव व वैज्ञानिक उन्नति में इस तरह खो गया है कि उसके हृदय को इच्छाओं व ईर्ष्या-द्वेष ने घेर लिया है। अध्यात्यचिंतन से दूर होते मनुष्य में आस्था रूपी दीपक जगाकर ही ईश्वर प्रेम की भावना जागृत की जा सकती है। उसे विभिन्न विकारों से मुक्त किया जा सकता है।

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में दीपक किसका प्रतीक है?

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में 'दीपक' प्रभु के प्रति आस्था, विश्वास एवं प्रेम का प्रतीक है

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 6.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाहती है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!' कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा अपने प्रियतम अर्थात ईश्वर का पथ आलोकित (प्रकाशित) करना चाह रही हैं। कवयित्री अपने हृदय में आस्था रूपी दीपक जलाकर उस प्रभु तक पहुँचने के मार्ग को प्रकाशवान कर देना चाहती हैं।

2014

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 7.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री का स्नेहहीन दीपक से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कवयित्री महादेवी वर्मा ने आकाश में जगमगाते असंख्य तारों को 'स्नेहहीन दीपक' कहा है क्योंकि वे बिना स्नेह (तेल) के ही जलते रहते हैं। वे किसी को प्रकाश नहीं देते। कवयित्री ने इन स्नेहहीन दीपकों की तुलना उन असंख्य मनुष्यों से की है, जिनके हृदय में दया, करुणा, ममता का भाव नहीं है। जिनमें परोपकार और उत्साह का अभाव है; जो किसी का मार्ग प्रशस्त नहीं करते।

Question 8.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने दीपक से मोम की तरह घुलने के लिए क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए कि उसके घुलने में उसका कौन-सा भाव छिपा है।

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!' कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा शरीर को मोम जैसा मृदुल और कोमल मानती हैं। जिस प्रकार मोम स्वयं को आग में गलाकर ही प्रकाश बिखरा पाता है, उसी प्रकार इस कोमल शरीर को प्रियतम के मिलन की साधना में घुलाना चाहती हैं। तभी प्रिय से मिलन संभव होगा। इसके घुलने में उनका ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का, त्याग का भाव छिपा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2013
काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 9.

कवयित्री महादेवी वर्मा की कविता 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

Question 10.

अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए जो दीप जलाया गया है, उसकी क्या विशेषताएँ हैं? 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता के आधार पर लिखिए।

Answer:

अपने प्रियतम परमात्मा को प्राप्त करने के लिए कवयित्री महादेवी वर्मा आस्था रूपी दीप को जलाए रखने की बात कहती हैं। उन्होंने अपने आस्था रूपी दीपक को हर बार अलग-अलग ढंग से जलने को कहा है। मधुर-मधुर, पुलक-पुलक और विहँस-विहँस कहकर उन्होंने दीपक की इन्हीं विशेषताओं की ओर संकेत किया है। 'मधुर-मधुर' में मौन मुस्कान है। 'पुलक-पुलक' में हँसी की उमंग है। कवयित्री चाहती हैं कि उनकी भक्ति भावना में प्रसन्नता बनी रहे। चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो आस्था रूपी आध्यात्मिक दीपक सदैव जलता रहे और परमात्मा का मार्ग प्रशस्त करे। कवयित्री के अनुसार परमात्मा को पाने के लिए भक्त को अनेक अवस्थाओं को पार कर भिन्न-भिन्न भावों को अपनाना पड़ता है। उसे आस्था रूपी दीपक प्रज्ज्वलित रखना पड़ता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 11.

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय! न जल पाया तुझ में मिल,
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल!
जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल!

(i) **पतंगे को पश्चाताप है कि वह**

(क) दिये का प्रकाश न पा सका
(ख) दीपक से एकाकार न हो सका
(ग) दीपक के स्नेह से वंचित रहा
(घ) ज्वाला-कण न बन सका

(ii) **स्नेहहीन दीपक किन्हें कहा गया है?**

(क) टिमटिमाते तारों को
(ख) चमकते जुगनुओं को
(ग) तेलरहित दीपकों को
(घ) जगमगाते चाँद को

(iii) **किस पंक्ति के कथन में विरोध दिखाई पड़ता है?**

(क) सारे शीतल कोमल नूतन
(ख) हाय! न जल पाया तुझ में मिल
(ग) स्नेहहीन नित कितने दीपक
(घ) जलमय सागर का उर जलता

(iv) **सागर का हृदय क्यों जलता है?**

(क) घिरते बादलों को देखकर।
(ख) तारों को चमकता देखकर।
(ग) बादलों में बिजली की कौंध देखकर।
(घ) विहँसते दीपक को देखकर।

(v) **पद्यांश में बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?**

(क) असंख्य तारे छिप जाते हैं।
(ख) वह अनंत सीमा वाला है।
(ग) गर्जन करता है पर बरसता नहीं।
(घ) बिजली का प्रकाश लेकर घिरता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(*i*) (ख) दीपक से एकाकार न हो सका
(*ii*) (क) टिमटिमाते तारों को
(*iii*) (घ) जलमय सागर का उर जलता
(*iv*) (ग) बादलों में बिजली की कौंध देखकर।
(*v*) (घ) बिजली का प्रकाश लेकर घिरता है।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 12.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने दीपक से किस बात का आग्रह किया है और क्यों?

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने दीपक से इस बात का आग्रह किया है कि वह साधना के कठोर पथ पर कष्ट की अनुभूति किए बिना मधुरता के साथ निरंतर जलते हुए परमात्मा के पथ को आलोकित करे, जिससे आत्मा को परमात्मा के दर्शन हों तथा आत्मा व परमात्मा का मिलन हो सके अर्थात वे एकाकार हो सकें। इसके लिए कवयित्री ने उसे परमार्थ के लिए जलने तथा प्राकृतिक वस्तुओं से प्रेरणा ग्रहण करके कभी सिहरते तो कभी मुस्कुराते हुए जलने का आग्रह किया हैं।

Question 13.

महादेवी वर्मा ने अपनी कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' को किसका प्रतीक माना है? और आकाश के चमकते तारों को स्नेहहीन क्यों कहा है?

Answer:

महादेवी वर्मा ने अपनी कविता में 'दीपक' को आत्मा का तथा 'प्रियतम' को परमात्मा का प्रतीक माना है। उसने आकाश के तारों को स्नेहहीन इसलिए कहा है क्योंकि उन्हें लग रहा है कि वे केवल प्रकृति के वश में होकर यंत्र के समान टिमटिमाने का कार्य कर रहे हैं, किंतु वे भावशून्य हैं अर्थात उनमें भक्ति की कोई भावना नहीं है।

Question 14.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए कौन-सा दीप जलाया है और वह उस दीपक को विहँस-विहँस जलने के लिए क्यों कह रही है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए अपनी आस्था एवं श्रद्धा के प्रतीक अपनी आत्मा के दीपक यानी आत्मदीप को जलाया है। वे अंतिम छंद 'जलते नभ में...' दीपक को विहँस-विहँस यानी मुस्कुराते हुए जलने के लिए कह रही हैं क्योंकि वे जानती हैं कि प्राकृतिक उपादानों से परमार्थ के लिए जलने की प्रेरणा अगर मुस्कुराते हुए ग्रहण की जाएगी, तो उसका परिणाम सकारात्मक रहेगा और दीपक के अंदर समस्त संसार के लिए जलने की भावना जागृत होगी।

Question 15.

महादेवी वर्मा ने 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में अपने दीप को धीरे-धीरे जलने के लिए क्यों कहा है और वह दीपक के द्वारा किसका पथ आलोकित करना चाहती हैं?

Answer:

महादेवी वर्मा ने 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में अपने दीप को धीरे-धीरे जलने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि प्रभु-दर्शन व परमार्थ के लिए वे उसे निरंतर जलाना चाहती हैं। वे नहीं चाहती हैं कि कुछ समय के लिए वह तेज़ जले और बाद में बुझ जाए। वे अपने आस्था के इस दीपक के द्वारा परमात्मा का पथ आलोकित करना चाहती हैं, ताकि आत्मा को परमात्मा के दर्शन हों तथा आत्मा व परमात्मा का मिलन हो सके।

2012

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 16.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में दीपक और प्रियतम किसके प्रतीक हैं?

Answer:

इस कविता में दीपक शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ आत्मा है और प्रियतम शब्द ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 17.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री दीपक को स्वयं समर्पित करने के लिए क्यों कहती है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कवयित्री ने दीपक को स्वयं समर्पित होने के लिए इसलिए कहा है क्योंकि कवयित्री में संपूर्ण समर्पण एवं त्याग की भावना है। प्रियतम रूपी ईश्वर को प्राप्त करने के लिए दीपक को स्वयं समर्पित होने के लिए कहा गया है।

Question 18.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री दीपक को 'प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिपल' जलने को क्यों कहती है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कवयित्री ने दीपक को 'प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिपल' जलने के लिए इसलिए कहती है क्योंकि वह हर पल ईश्वर को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहना चाहती है। अपने 'प्रियतम रूपी ईश्वर' को प्राप्त करने के लिए हर क्षण उसी पथ पर चलत रहना चाहती है, वह एक पल के लिए भी अपने लक्ष्य से दूर जाना नहीं चाहती है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 19.

निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तरों वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल!

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(i) 'स्नेहहीन दीपक' से क्या तात्पर्य है?

(क) दीपक जिसमें तेल नहीं है।

(ख) व्यक्ति, जिसके हृदय में प्रेम नहीं है।

(ग) जिसके हृदय में ईश्वर के प्रति आस्था नहीं है।

(घ) जिसके हृदय में आस्था और विश्वास है।

(ii) सागर का हृदय क्यों जलता है?

(क) स्नेहहीन असंख्य तारों को देखकर

(ख) आस्थाहीन असंख्य तारों को देखकर

(ग) स्वयं स्नेहपूर्ण होने के कारण

(घ) धरती पर अशांति होने के कारण

(iii) कवि ने बादल की क्या विशेषता बताई है?

(क) बादल बिजली का प्रकाश लेकर घिरता है

(ख) बादल पृथ्वी को प्रेम देने के लिए जलवृष्टि करता है

(ग) बादल बाधाओं का रूप लेकर आता है

(घ) बादल गरजकर बरसता है

(iv) 'विहँस-विहँस जलने' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(क) दूसरों को सुख देना

(ख) सदैव प्रसन्न रखना

(ग) स्नेह प्रकट करते हुए जलना

(घ) धीरे-धीरे प्रकाश देना

(v) निम्नलिखित में 'नभ' शब्द का पर्यायवाची है–

(क) पथ

(ख) आकाश

(ग) सरिता

(घ) सिंधु

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(*i*) (ख) व्यक्ति, जिसके हृदय में प्रेम नहीं है

(*ii*) (क) स्नेहहीन असंख्य तारों को देखकर

(*iii*) (ख) बादल पृथ्वी को प्रेम देने के लिए जलवृष्टि करता है

(*iv*) (ग) स्नेह प्रकट करते हुए जलना

(*v*) (ख) आकाश

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 20.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता के माध्यम से कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही हैं और क्यों?

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाहती है? स्पष्ट कीजिए।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 21.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री दीपक को 'विहँस-विहँस' जलने के लिए क्यों कहती है?

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में दीपक को 'विहँस-विहँस' जलने को कहा गया है क्योंकि कवयित्री की दीपक रूपी आत्मा अपने प्रियतम रूपी ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सदा प्रसन्न रहना चाहती है। कवयित्री का अतर्मन कभी निराश व उदास नहीं रहना चाहता। वह सदा प्रफुल्ल रहना चाहता है।

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 22.

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री दीपक से जलने का आग्रह क्यों कर रही हैं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री दीपक से जलने का आग्रह इसलिए कर रही हैं, ताकि उसके अज्ञात प्रियतम (निर्गुण ब्रह्म) का पथ आलोकित रहे। दीपक कवयित्री की आस्था, विश्वास व श्रद्धा का प्रतीक है। वह चाहती है कि उसके दीपक के प्रकाश से आस्था की सुगंध सर्वत्र फैल जाए तथा वह अपनी भक्ति के ज्वाला-कण से ऐसे नवीन प्राणियों को भी श्रद्धा से सुदीप्त कर दे जो भटक रहे हैं। दीपक की सार्थकता इसी में है कि वह अपने प्रकाश से लोगों को सही मार्ग दिखा सके। अतः उसका जलना संसार में परमार्थ के लिए है। इसीलिए कवयित्री उससे निरंतर जलने का आग्रह भी कर रही है।

Question 23.

महादेवी वर्मा के गीत के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों?

Answer:

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने दीपक से इस बात का आग्रह किया है कि वह साधना के कठोर पथ पर कष्ट की अनुभूति किए बिना मधुरता के साथ निरंतर जलते हुए परमात्मा के पथ को आलोकित करे, जिससे आत्मा को परमात्मा के दर्शन हों तथा आत्मा व परमात्मा का मिलन हो सके अर्थात वे एकाकार हो सकें। इसके लिए कवयित्री ने उसे परमार्थ के लिए जलने तथा प्राकृतिक वस्तुओं से प्रेरणा ग्रहण करके कभी सिहरते तो कभी मुस्कुराते हुए जलने का आग्रह किया हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in